Airo International Research Journal

Volume XIII, ISSN: 2320-3714
December, 2017
Impact Factor 0.75 to 3.19

UGC Approval Number 63012

लोककवि अहमद : दार्शनिक चिंतन

डॉ. ओमप्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

हरियाणा बहुधान्य भूमि है, जहां लहलाती हरियाली और मवेशियों की धवल दूग्ध धारा इसे सोंधी महक के साथ-साथ अपरिमित शक्ति भी प्रदान करती है । यमुना, सरस्वती और दृषद्वती नदियों की दीप्ति कांतिमय लहरें यहां के जनजीवन को आह्लादित करती है । ऐसी पावन पुण्य भूमि पर कवियों साहित्य मनीषियों का प्राचुर्य रहा है । इस पावन धरती (थानेसर) कुरुक्षेत्र के अंक में जन्मे अहमद बख्श थानेसरी का योगदान कम नहीं है । कर्म से लोक संगीतकार अहमद बख्श ने अपनी हरियाणवी भाषा में रचित रामायण में प्रभु राम के जीवन की झांकियों का विशद चित्रण किया है । कवि अहमद ने अपनी विलक्षण प्रतिभा से एक ऐसे काव्य संसार का निर्माण किया है जिसका एक छोर आध्यात्मिकता से तो दूसरा छोर लोकानुभूति से अनुरंजीत है । कवि अहमद अपनी रामायण में एक दर्शनवेत्ता बनकर उभरे हैं । उनकी दार्शनिक दृष्टि पग-पग पर उभरी है ।

साहित्यक विरासत के रूप में कग्वेद संहिता ही भारत का प्राचीनतम ग्रन्थ है। करवेद अपने वर्तमान रूप में, किसी एक व्यक्ति या काल की रचना नहीं है, अपितु काल-प में अनेक कण्ठों द्वारा परप्परा से प्रवाहित पत्रों का गुप्फत है । भग्वेद में विपशु- स्तुतिपरक मन्त्र केवल चार है तथा इन्द्र, अग्नि, उणा, बृहस्पति, वरुण आदि के अनेक स्तुति परक मन्त्र हैं । यास्क के शब्दों में रियों से व्याप्त होने के कारण अथवा रसियों से संसार को व्याप्त करते के कारण ही सूर्य विष्णु के नाम से अभिहित होता है। क्योंकि वैष्णव पक्ति के मूलाधार वैपाव ही है, अत: मक्ति की प्राचीनता सिद्ध करने के लिए वैदिक विष्णु को मी मध्यकालीन विष्णु ही दृषि से देखने की चेष्टा की कुछ विद्वानों ने की है । वैष्णव पक्ति को समझने की दृषि से उपनिषदों की सामान्य विचारधारा पर प्रकाश डालना आवश्यक है । उपनिषदों में सृष्टिका के रूप में जीवों के स्थायी परमात्मा को माना गया है । जगत का कारण स्वयंका ही है। इसका समर्थन ' श्वेता खतर' उपनिषद् के छठे अध्याय में किया गया है .. सम्पूर्ण जगत् में केवल परमात्मा की ही महिमा का विस्तार है जिस के द्वारा यह संसार चक्कर चलाया जा रहा है । पृथ्वी, जल, प्राकाश आदि पार्यो तत्व उसी परमात्मा के शासनाधीन है ।

कठोपनिषद् के प्रथम अध्याय में शरीर, जीवात्मा और मन का परस्पर सम्बन्ध इस प्रकार बताया गया है -- शरीर को रथ रूप माना गया है, जीवात्पा उस पर बैठने वाला स्वामी है और बुद्धि उसका

Airo International Research Journal

Volume XIII, ISSN: 2320-3714
December, 2017
Impact Factor 0.75 to 3.19

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

UGC Approval Number 63012

(घ) सृष्टि

ब्रस की प्रेरणा से माया या प्रकृति ही पंच मूर्ती से सृष्टि की रचना करती है । जगत तत: वलप और सत्य है । पाया या जीव की प्रांति के कारण वह असत्य प्रतीत होता है । जगत् का दृश्यमान रूप मिथ्या है, क्योंकि वह परिवर्तनशील और स्थिर है । जब जीव को अपने माया के तथा व्रता के यधार्थ रूप का आभास मिल जाता है तो वह सम्पूर्ण जगत को ब्रमय देखता है। तब उसे जगत में ब्रल के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं देता । जगत् ब्रस की त से रचित हैं, उनमें स्थित है, उनसे व्याप्त है और उन्हीं का प है । जगत का अपने मूल कारण बस में क लीन हो जाना ही प्रलय है |

(ह.) मोपा :

सांसारिक बन्धों से मुक्ति मिलना ही मोपा है। मव बन्धन से मुक्ति प्राप्त करने के अनेक साधन है । धर्म, वैराग्य , ज्ञान, योग और भक्ति आदि साधनों से जीव को मोदा मिल सकता है । धर्म के आंचरण से मन और चित का पालिन्च तथा कलुषता समाप्त हो जाती है और चित की शुद्धि होती है । क्ति की शुद्धि के उपरान्त विषय वासनाओं के प्रति वैराग्य उत्पन्न हो जाता है, तब योग के द्वारा ज्ञान प्राप्त हो जाता है । आत्म ज्ञान की प्राप्ति होने पर मोदा की प्राप्ति होती है । शान मार्ग अत्यन्त अग प्य एवं दुरुह है । पक्तिमार्ग अत्यन्त सरल और सुगम है । पक्ति स्वयं मुक्ति है । माया और भक्ति । दोनों भगवान के आश्रित है । मक्ति पर भगवान की अनुकूलता रहती है । इसीलिए माया पक्ति से डरती है और मक्त पर अपनी प्रभुता कलाने में असमर्थ रहती है । मगवद् पक्ति की उपलव्यि के उपरान्त मुक्ति मिलती है ।

तृप वृद्ध पिता तलक मन अस को
दे पिंड दान गया पोत्र बीच तीन पुस्त स्वर्ग में बास करे ।।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि भारतीय दार्शनिकों ने जिन दार्शनिक सिद्धांतों को जीवन में उतारने का प्रयत्न किया है वह सभी अहमद रामायण में पूर्णरूपेण विद्यमान है ।

संदर्भ सूची

1. यस्क निरुक्त पृष्ठ 12-13
2. मलिक मोहम्मद जायसी, वैष्णो भक्ति आंदोलन का अध्ययन, राजपाल एंड संस, दिल्ली 1997, पृष्ठ 29
3. वही पृष्ठ 32
4. अहमद रामायण, हरियाणा साहित्य अकादमी , पृष्ठ 328
5. वही पृष्ठ 167
6. वही पृष्ठ 169